5292

ओ ३ म्

ईसाइयों को आर्य समाज

की

चुनौती

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती

द्वारा

चुनौती भरे ३६ प्रश्न

प्रकाशक :

ए० बालरेड्डी

संयोजक, अराष्ट्रीय प्रचार निरोध समिति,
आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्य दक्षिण,

हैदराबाद

अक्तूबर १९६९ प्रथम बार–५०००

आभार प्रदर्शन

श्री लक्ष्मण प्रसाद दुबे गुत्तेदार, पी. डब्ल्यू. डी.

प्रधान आर्य समाज, उमदा बाजार

ने अपने शुभदान द्वारा इस ट्रैक्ट को प्रकाशित करवाया है। तदर्थ समिति उनका आभार मानती है।

१. क्या यह सत्य है कि वे उपदेश, जो ईसा-मसीह के शिष्यों द्वारा लिखित माने जाते हैं, कहीं भी उपलब्ध नहीं हैं। क्या उनका कहीं अस्तित्व है? यदि कहीं है तो सिर्फ उन्हें किसी पुस्तकालय अथवा कौतुकालय में रखा जाना चाहिए। क्या यह पुस्तकें कही जा सकती हैं ?

२. क्या यह सत्य है कि वर्तमान ईसाई उपदेश किसी यूनानी हस्तलिपि के अनुवाद मात्र हैं ?

३ क्या इन उपदेशों में आज इसका कोई साक्ष्य है कि ईसामसीह किसी धर्म को स्थापित करना चाहते थे?

४. यह कथन कहां तक सहीं है कि वर्तमान ईसाइयत पाल की ईसाइयत है अर्थात सेन्ट पाल द्वारा संस्थापित मत है ?

५. क्या यह सत्य नहीं है कि सेन्ट पाल की ईसामसीह से भेंट नहीं हुई ? और न ही उसने ईसा-मसीह के कोई उपदेश श्रवण किये और न उनका भाषण श्रवण किया ?

६. क्या यह सत्य है कि मेरी, जो ईसा की मां थी, जोजफ नामक बढ़ई की पत्नी थी ?

७. क्या यह सत्य नहीं है कि ईसा, उसके जोजफ के साथ विवाह के पश्चात पैदा हुआ ?

८. क्या यह सत्य है कि ईसा के अतिरिक्त मेरी के कई बच्चे और भी थे ?

९. क्या यह सत्य है कि अपने गर्भ-धारण काल में 'मेरी' अपने माता-पिता के पास नहीं रह रही थी ?

१०. क्या यह सत्य है कि जब उसका प्रसव काल निकट था वह जोजेफ ही था जो उसे सराय में ले गया, जहां मैरी ने ईसा को जन्म दिया ?

११. क्या यह सत्य है कि ईसाइयत की पुस्तक में यह कहा गया है कि "एक कुमारी गर्भ धारण करेगी और पुत्र को जन्म देगी, और उस इम्मानुएल के नाम से पुकारेगी ?

१२. क्या यह सत्य है कि अमरीका में प्रकाशित ओल्ड टैस्टामैंट के अंक में 'वरजिन, शब्द के स्थान पर 'यंग वोमैन' नहीं 'यंग वोमेन है ?

१३. क्या यह सत्य है कि कुछ रूढ़िवादी ईसाइयों ने इस टीका के प्रति विरोध प्रकाशित किया है और अनुरोध किया है कि यदि 'वरजिन' शब्द बाईबिल से गायब हो जाता है तो ईसा की वरजिन द्वारा जन्म होने की बात, जिस पर ईसाइयत की नींव खडी है, समाप्त हो जायगी और नीव हिल जाएगी?

१४. क्या यह सत्य है कि ईसाईयाह में अंकित कुमारी से उत्पन्न पुत्र का जो इम्मानुएल नाम था वह ईसा का नहीं था ? तब ईसाईयाह की भविष्य-वाणी का ईसा से कैसे सम्बन्ध जोड़ा जा सकता है?

१५. यदि मेरी विवाहिता थी और उसके अनेक सन्तान थीं तो यह विश्वास करना कहां तक उचित है कि ईसा जोजेफ का बेटा नहीं था ?

१६. यदि ईसामसीह की उत्पत्ति होली घोस्ट से है तो उसका वर्णन अभी भी ईश्वर के पुत्र के

रूप में क्यों होता है ? और होली घोस्ट के पुत्र के रूप में क्यों नहीं होता ?

१७. क्या यह सत्य है कि ईसाइयों का एक सम्प्रदाय यह विश्वास करता है कि ईसामसीह को कभी सूली पर नहीं चढाया गया, परन्तु उसके स्थान पर किसी और को दण्ड दिया गया और ईसा के प्राण इस तरह बचाए गए ?

१८. क्या यह सत्य है कि जब ईसा पर रोमन गवर्नर पौन्टियस पाइलेट के दरबार में मुकदमा चल रहा था, गवर्नर को उसकी पत्नी ने बताया कि ईसा निर्दोष है, और उसे कुछ हानि न पहुँचाई जाए ?

१९. क्या यह भी सत्य है कि गवर्नर भी इस मत का नहीं था कि ईसा को सजा दी जाए और उसने केवल ईसा के दुश्मन यहुदियों द्वारा उठाये गए आन्दोलन के दबाव में आज्ञा प्रसारित की ?

२० क्या यह सोचना तर्क संगत नहीं है कि जब गवर्नर और उसकी पत्नी ईसा को सजा देने के पक्ष में नहीं थे और उसको कोई नुकसान पहुँचाना नहीं चाहते थे, तो वे अधिकारी उन्हें ईसा को सूली पर चढाने के लिए ले जाने का कार्य सौंपा गया था, वे भी ईसा को बचाने का ही प्रयास करेंगे ?

२१. क्या यह सत्य है कि जब ईसा कलवरी को ले जाया जा रहा था और उसके कन्धे पर सूली थी, उससे वह सूली ले ली गई और भीड़ में से किसी एक और मनुष्य को दे दी गई ?

२२. क्या यह सत्य है कि जब ईसा को सूली पर कीलों से गाडा गया तो वह चिल्लाया, 'या खुदा तूने मुझे इस घडी क्यों छोड दिया' ?

२३. क्या इस विश्वास की, जो एक ईसाई सम्प्रदाय द्वारा माना जाता है कि ईसा कभी सूली पर नहीं चढ़ाया गया और अधिक पुष्टि नहीं हो जाती क्योंकि स्वयं ईश्वर का पुत्र होने के कारण वह ईसा नहीं हो सकता कि जिसने उन शब्दों को मुंह से निकाला और वह बेचारा व्यक्ति होगा जिसको खुशामदी अधिकारियों ने पकड लिया था क्योंकि गवर्नर और उसकी पत्नी नहीं चाहते थे कि ईसा सूली पर चढे?

२४. क्या इस विश्वास को इस बात से और सहारा नही मिलता कि तथा-कथित सूली पर चढाये जाने के तीन दिन पश्चात ईसा को उसके शिष्यों ने देखा ?

२५. इस मत से कि, ईसा सूली पर चढ़ाये, जाने के पश्चात एक प्रकार की गुफा में लेटा रहा, तीन दिन बाद उठा, अपने शिष्यों से मिला और उनके ही सम्मुख सशरीर स्वर्ग को उड़ गया' क्या उपरोक्त बात अधिक तर्कपूर्ण और ठीक नहीं लगती ?

२६. क्या यह सत्य है कि जब पौन्टियस पाइलेट के मित्र एइलास लामिया ने नाजरथ के जीसस के विषय में पूछा तो उसने उत्तर दिया, 'जीसस नाजरथ? नहीं मुझे याद नहीं । मेरे लिए उस नाम का

कोई महत्व नहीं ? पौन्टियस जब रोम का गवर्नर था उसने जीसस क्राइस्ट को सजा दी थी ?

२७. क्या यह सत्य नहीं है कि ईसा के अधिकांश जीवन का वर्णन इंजील में नहीं है ?

२८. क्या यह सत्य नहीं है कि कुछ लोगों के कथन अनुसार उस काल में ईसा भारत अथवा तिब्बत में था, जहाँ ईसा द्वारा 'पर्वत पर उपदेश' में प्रसारित विचारों जैसे विचार साधारणतया माने जाते हैं और व्यवहार में लाये जाते हैं ?

२९. क्या ईसाई यह विश्वास करते हैं कि आदम और हव्वा से उत्पन्न सब व्यक्ति पापी हैं और उस ईश्वर में विश्वास करने वालों को बचाने के लिये ईश्वर पुत्र ईसा को संसार में भेजा गया ?

३०. यह माना कि ईसाईयों के विश्वास के अनुसार आदम और हव्वा से उत्पन्न सब सन्तान पापी हैं, क्या यह बात ईश्वर की बुद्धि पर प्रभाव नहीं डालती ? यदि कुम्हार द्वारा बनाये सब बर्तन चटखे हो तो क्या यह उसका दोष नहीं है ?

३१. यदि यह माना जाये कि ईश्वर ने मानव जाति पर दया की और उन्हें बचाने के लिए ईसा को भेजा, तो ईश्वर ने लाखों वर्ष इस निर्णय को लेने में क्यों लिए कि रक्षक को भेजा जाए ? यदि लाखों स्त्री और पुरुष जो पापी थे इससे पहले सदा के लिए नरक को गये तो क्या इसका दोष ईश्वर पर नहीं ?

३२. क्या रोमन अथवा किसी भी इतिहास में

ईसा, उसके उपदेश तथा उसके सूली चढ़ाये जाने के विषय में कोई विवरण है ?

३३. क्या यह सत्य नहीं है कि जब ईसाई पादरी युरोप से भारत आए तो उन्होंने भारतीय परिधान पहना और कहा कि हम पंडित हैं और अमरीका से आये है?

३४. क्या यह सत्य नहीं है कि उन्होंने गिरजे बनाये और उसमें एक स्त्री की मूर्ति स्थापित की और कहा कि यह शिव की पत्नी गिरजा है ?

३५. क्या यह सत्य नहीं है कि ईसाई चर्च भारतीय भाषा में गिरजा कहलाता है ?

३६. क्या यह सत्य नहीं है कि कुछ ईसाई पादरियों ने गांवों के कुओं में चालाकी से डबल रोटी डाल दी और जब इन रोटियों के टुकडे उन्होंने उसमें से निकाले तो उन्होंने घोषणा की कि वे सब हिन्दू जो उस कुंए से पानी ले रहे थे, ईसाई हो गए और वे सब ग्रामवासी इस बात को कि वे ईसाई हो गए हैं, अपने अज्ञान और निर्दोषिता के कारण मान गए और ईसाई हो गए ?

गुरु विरजानन्द

5292

दीपक आर्ट प्रिंटर्स, हैदराबाद में मुद्रित,